TACTFUL MANAGEMENT

ISSN: 2319-7943
IMPACT FACTOR : 2.9016(UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2017

''वर्तमान् भारतीय अर्थव्यवस्था में नोटबंदी के प्रभाव''

डॉ. श्रीमती सुनीला एक्का
सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र)
शासकीय महाविद्यालय मरवाही
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

प्रस्तावना :

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 8 नवंबर, 2016 को रात 8:00 बजे टेलीविजन पर यह घोषणा की कि आधी रात से 500 रू. और 1000 मूल्य के नोट अवैध हो जायेंगे। उन्होंने लोगों से भावपूर्ण अपील की, वे उन्हें 50 दिन का समय दें, इस दौरान थोड़ी दिक्कतें तो जरूर होंगी, लेकिन उसका नतीजा अच्छा होगा। दूसरी ओर सरकार ने एलान किया कि अब एक दिन में 2000 रू. की नगद ए.टी.एम. (ATM) से 2500 रू. तक निकाले जा सकेंगे। बैंक के काउंटर से 4000 रू. की जगह 4500 रू. बदलवाए जा सकेंगे। बैंक से एक हफ्ते में 20000 रू. की जगह 24000 रू. तक निकाले जा सकेंगे। सरकार ने कुछ स्थानों पर भुगतान के लिए पुराने नोटों की वैधता 10 दिन और बढ़ा दी, जिसके अंतर्गत अस्पतालों, श्मशानघाट, मेट्रो स्टेशनों, दवा की दुकानों, पेट्रोल पम्पों आदि पर 24 नवंबर तक 500 और 1000 रू. के नोट स्वीकार किए जा सकेंगे। बिजली और पानी के बिलों का भुगतान 24 नवंबर तक 500 एवं 1000 रू. के पुराने नोटों से किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त देश के सभी टोल पर 18 नवंबर तक कोई टैक्स नहीं लिया जा सकेगा।

नोटबंदी के पहले सरकार में जो बड़ी सफलता मिली, वहीं अगले कुछ ही दिनों में चुनौती व असफलता में परिवर्तित होने लगी। विमुद्रीकरण (demonetization) के बाद बैंकों में डिपॉजिट की बाढ़ से काली नगदी का आकलन और नोटबंदी का लक्ष्य था, वह पटरी से उतरने लगा।

''वर्तमान् भारतीय अर्थव्यवस्था में नोटबंदी के प्रभाव''

- नोटबंदी के इस फैसले से कई चुनौतियॉ सामने आयी। बाजार से अचानक 86 प्रतिशत नगदी की वापसी से कृषि, छोटे उद्योग–धंधों, व्यापार और बाजार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगा।
- मुद्रा विनिमय बाजार में रूपया पहले ही दबाव में आ चुका है, जिसका मुख्य कारण अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की जीत है, जिसने वहॉ के निवेशकों को भारी लाभ होने के प्रति आशान्वित हुए उन्हें अपने निवेश में ज्यादा लाभ मिलने की संभावना बढ़ गई है। सकल घरेलु उत्पाद की वृद्धि दर में गिरावट आने की संभावनाऍ एक चुनौती बन कर सामने आ गई है।
- जब से भारत में नोटबंदी लागू हुई, तब से यहॉ की आर्थिक गतिविधियॉ सुस्त हुई है। भारतीय बाजार में विदेशी निवेशकों का भरोसा घटा है। लोगों की रोजी–रोटी अर्थव्यवस्था व रूपये की कीमत को संभालना सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक के सामने एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आयी है।
- सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनॉमी के अनुसार रोजगार, टोल फ्री, करेंसी की छपाई की लागत आदि पर 1.28 लाख करोड़ का नुकसान हो चुका है।
- भारत का बैंकिंग सिस्टम बुरी तरह भ्रष्ट है, यह सिर्फ कर्ज देने में ही गंदा नहीं है, वरन् इसका प्रयोग कालेधन की धुलाई में भी हो सकती है। सरकार को इसको साफ करने में एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आयी है।

डॉ. श्रीमती सुनीला एक्का

- नई नगदी आने तक इसे लोगों को लौटाना भी संभव नहीं है। यह आम लोगों के उपभोग का खर्च है। अर्थव्यवस्था की मॉग है, जो बैंक खातों में बेकार पड़ी है। बैंक इसे संभालने की लागत से दोहरे हुए जा रहे हैं, जबकि लोग अपने पैसों की खारित बचत निकालने वाले बैंकों की कतार में खड़े होकर लाठियॉ खा रहे हैं।
- 2.5 लाख रूपये जमा करने वाले से लेकर हर खाते को जॉच के दायरे में लाने से गरीब व निर्धन वर्ग को उद्धेलित होने का खतरा बना रहेगा। जॉच में आयकर अधिकारी को कई तरह की असीम शक्तियॉ मिल जायेंगी और लोग अदालतों के चक्कर काटने की बजाए रिश्वत का सहारा लेकर इस समस्या का समाधान अपनाने लगेंगे।

नोटबंदी कार्यक्रम जब से लागू हुई है, इसे लागू करने में जो समस्याऍ एक चुनौती के रूप में सामने आयी हैं, वह इस बात को दर्शाता है कि प्रधानमंत्री व उनका प्रशासनिक अमला एक समान गति व लय की तरह कार्य करते हुए आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। प्रधानमंत्री जिस तेजी के साथ बदलाव लाना चाहते हैं, इसके लिए आवश्यक है कि सरकारी व निजी क्षेत्र के प्रतिभा सम्पन्न, प्रतिभावान लोगों को एकजुट कर एकमंच तैयार किया जाए, जिससे नोटबंदी के लक्ष्यों और योजनाओं को सफलतापूर्ण ढंग से क्रियान्वित किया जा सके।

REFERENCES *(संदर्भ–सूची) :–*

1.प्रो. बी.एल. वर्मा / श्रीमती पद्मा बेनर्जी / प्रबोध अर्थशास्त्र / पृष्ठ 50, 51, 59
2.दैनिक मासिक पत्रिका योजना / नवंबर 2016 / पृष्ठ 10, 14
3.दैनिक समाचार पत्र नई दुनियॉ / दिनांक 29 नवंबर 2016